Need to telecast Urdu News on the National Network of Doordarshan

श्री मोहम्मद खलीलुर रहमान (आंध्र प्रदेश) : मोहतरमा डिप्टी चेयरमैन साहिबा, हिन्दुस्तान में करोड़ों अवाम उर्दू बोलते हैं, उर्दू लिखते हैं, और उर्दू पढ़ते हैं । जंगे आजादी के दौरान में उर्दू जुबान ने इंतिहाई अहम किरदार अदा किया हैं, चुनांचे, उस जमाने में उर्दू जुबान ने वह नारा दिया कि जंगे आजादी के सूरमाओं ने उससे एक किस्म का वजदान हासिल किया।–

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है" "इन्कलाब जिन्दाबाद" ये सब उर्दू जुबान के नारे हैं जिससे जंगे आजादी के सूरमाओं को एक किस्म का वजदान मिला। मगर इंतिहाई अफसोस की बात है कि आज उसी जुबान को बिल्कुल नजरअंदाज किया जा रहा है । एक जमाने से यह मुतालबा किया जा रहा है कि दूरदर्शन से उर्दू में न्यूज बुलेटिन को शुरू किया जाय। मगर इस मतालबे के बावजूद मुझे इंतिहाई अफसोस के साथ कहना पड़ता हैं कि दूरदर्शन की जानिब से उर्दू को इंतिहाई नजरअंदाज किया जा रहा हैं। नेशनल फ्रंट के जमाने में उस वक्त के वजीर हमारे पी उपेन्द्र जी ने यह अहकामात जारी किये थे कि दिल्ली का जो "बी" चैनल है उससे उर्दू की खबरें जारी की जायें। इसी तरह से हैदराबाद का जो केन्द्र हैं, दूरदर्शन हैदराबाद से वहां रीजनल प्रोग्राम के लिये जो टाइम दिया गया है उसमें उर्दू न्यूज बुलेटिन के ताल्लक से भी अहकामात जारी किये गये थे । मगर अफसोस की बात हैं कि अब तक इन अहकामात पर अमल नहीं किया गया है । चुनांचे, मौजूदा वजीर श्री अजित पांजा साहब जब हैदराबाद तशरीफ लाये थे और उनसे पूछा गया कि आप उर्दू में न्यूज बुलेटिन कब से शुरू करने वाले हैं तो मुझे यह कहते हुये इंतिहाई अफसोस होता हैं कि अजीत पांजा साहब ने साफ इससे इंकार किया और यह कहा कि जब हिन्दी में न्यूज बुलेटिल होता है तो उर्दू में न्यूज बुलेटिन की जरूरत नहीं है । यह इंतिहाई अफसोस की बात है । यह जो उर्दू की दुश्मनी का रवैया है मैं कहूंगा कि इस रवैये को दूर किया जाय अगर आप जल्द नेशनल नेटवर्क पर उर्दू में न्यूज बुलेटिन शुरू कीजिये । यह वक्त की अहमतरीन जरूरत है खास तौर पर पर जबकि इस हाउस के चेयरमन और डिप्टी चेयरमैन साहब अच्छे उर्दूदां हैं और उर्दू से दिलचस्पी और हमदर्दी रखते हैं। मगर इसके बावजूद हम जो कुछ यहां पर ऐवान में मतालबा करते हैं या उन मतालबात की तरफ खास तवज्जह नहीं की जाती । मैं आपकी तवक्को से हमारे मिस्टर आफ इन्फार्मेशन से, जो यहां तशरीफ फमा हैं, यह दरख्वास्त करना चाहता हूं कि वे इंतिहाई हमदर्दी से इस पर गौर करें और जल्द से जल्द उर्दू में नेशनल नेटवर्क पर उर्दू न्यूज बुलेटिन शुरू करें इस वजह से कि इस वक्त दिल्ली में, पंजाब में, हैदराबाद में, मध्य प्रदेश में, उत्तर प्रदेश में, बिहार में, वेस्ट बंगाल में, महाराष्ट्र में, आंध्र प्रदेश में और कर्नाटक में एक खासी तादाद उर्दू बोलती हैं । मुल्क के करोड़ों अवाम उर्दू जानते हैं और सब का यह मुतालबा है । चुनांचे जाफर कमेटी रिव्यू के ताल्लुक से जो कमेटी बनाई गई थी, उसने भी वह मुतालबा किया है कि उर्दू प्रोग्राम को ज्यादा से ज्यादा दूरदर्शन पर दिया जाय।

लिहाजा मैं ज्यादा वक्त लिये बगैर आपके त्वस्सुत से वह दरख्वास्त करूंगा हुकूमते हिन्द से कि वह उर्दू न्यूज बुलेटिन के ताल्लुक से हमदर्दाना गौर करे और जल्द से जल्द उर्दू बुलेटिन जारी करते हुए लाखों उर्दूदां अवाम की ख्वाहिशात को पूरा करें ।

†[شری محمد خلیل الرحمان

(آندھرا پردیش) : محترمہ ڈپٹی چیئرمین صاحبہ - ہندوستان میں

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

دلی کا جو (بی) چینل ہے اس سے اردو کی خبریں جاری کی جائیں - اسی طرح حیدرآباد کا جو کیندر ہے- دوردرشن حیدرآباد سے وہاں ریجنل پروگرام کھلئے جو قائم دیا گیا ہے اسمیں اردو نیوز بلیٹن کے تعلق سے احکامات جاری کئے تھے - مگر افسوس کی بات ہے کہ اب تک ان احکامات پر عمل نہیں کیا گیا ہے - چنانچہ موجودہ وزیر شری اجیت پانجا صاحب جب حیدرآباد تشریف لائے تھے اور ان سے پوچھا گیا کہ آپ اردو نیوز بلیٹن کب سے شروع کرنے والے ہیں تو مجھے یہ کہتے ہوئے انتہائی افسوس ہوتا ہے کہ اجیت پانجا صاحب نے صاف اس سے انکار کیا اور یہ کہا کہ جب ہندی نیوز بلیٹن ہوتا ہے تو اردو نیوز بلیٹن کی ضرورت نہیں ہے - یہ انتہائی افسوس کی بات ہے - یہ جو اردو کی دشمنی کا رویہ ہے میں کہونگا کہ اس رویئے کو دور کیا جائے اور آپ جاد نیشنل نیٹ ورک پر اردو میں نیوز بلیٹن شروع کیجئے - یہ وقت کی اہم ترین ضرورت ہے خاص طور پر جبکہ اس کروڑوں عوام اردو بولتے ہیں - اردو لکھتے ہیں اور پڑھتے ہیں- جنگ آزادی کے دوران میں اردو زبان نے انتہائی اہم کردار ادا کیا ہے - چنانچہ اس زمانہ میں اردو زبان نے وہ نعرہ دیا کہ جنگ آزادی کے سورماؤں نے اس سے ایک قسم کا وجدان حاصل کیا -

سر فروشی کی تمنا اب ہمارے دل میں ہے
دیکھنا ہے زور کتنا بازوئے قاتل میں ہے

(انقلاب زندہ باد) یہ سب اردو زبان کے نعرے ہیں جس سے جنگ آزادی کے سورماؤں کو ایک قسم کا وجدان ملا - مگر انتہائی افسوس کی بات ہے کہ آج اسی زبان کو بالکل نظر انداز کیا جا رہا ہے - ایک زمانے سے یہ مطالبہ کیا جارہا ہے - کہ دور درشن سے اردو میں نیوز بلیٹن کو شروع کیا جائے - مگر اس مطالبہ کے باوجود مجھے انتہائی افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ دور درشن کی جانب سے اردو کو انتہائی نظر انداز کیا جا رہا ہے - نیشنل فرنٹ کے زمانہ میں اس وقت کے وزیر ہمارے بی- اپیندر جی نے یہ احکامات جاری کئے تھے کہ

[شری محمد خلیل الرحمان]

ہاؤس کے چیر میں اور قینگی چیر میں صاحب اچھے اردو داں ہیں - اور اردو سے دلچسپی اور ہمدردی رکھتے ہیں - مگر اسکے باوجود ہم جو کچھ یہاں ایوان میں مطالبات کی طرف خاص توجہ نہیں کی جاتی - میں آپکی توقع سے ہمارے منسٹر آف انفارمیشن سے- جو یہاں تشریف فرمائیں - یہ درخواست کرنا چاہتا ہوں کہ وہ انتہائی ہمدردی سے اس پر غور کریں اور جلد سے جلد اردو میں نیشنل نیٹورک پر اردو نیوز بلیٹن شروع کریں اس وجہ سے کہ اس وقت دلی میں - پنجاب میں - حیدرآباد میں - مدھیہ پردیش میں - اتر پردیش میں - بہار میں- ویسٹ بنگال میں - مہاراشٹر میں- آندھرا پردیش میں اور کرناٹک میں ایک خاص تعداد اردو بولتی ہے - ملک کے کروڑوں عوام اردو جانتے ہیں - اور سب کا یہ مطالبہ ہے - چلانچہ جعفر کمیٹی رپور کے تعلق سے جو کمیٹی بنائی گئی تھی اس نے بھی یہ مطالبہ کیا ہے کہ اردو پروگرام کو زیادہ سے زیادہ دوردرشن پر دیا جائے -

لہذا میں زیادہ وقت لئے بغیر آپکے توسط سے یہ درخواست کروں گا حکومت ہند سے کہ وہ اردو نیوز بلیٹن کے تعلق سے ہمدردانہ غور کرے اور جلد سے جلد اردو بلیٹن جاری کرتے ہوئے لاکھوں اردو داں عوام کی خواہشات کو پورا کرے -]

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : महोदया, यह बहुत ही आवश्यक है... (**व्यवधान**)

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश) : मैं इसकी ताईद करता हूं। उर्दू के साथ दूरदर्शन पर सौतेला व्यवहार किया जा रहा है।

†[شری محمد افضل عرف م -

افضل (اتر پردیش) : میں اسکی تائید کرتا ہوں - اردو کے ساتھ دوردرشن پر ناجائز برتاؤ کیا جا رہا ہے -]

THE MINISTER OF STATE (INDEPENDENT CHARGE) OF THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING) (SHRI AJIT KUMAR PANJA): May I react to this?

श्री रफीक आलम (बिहार) : मैं भी इसकी ताईद करता हूं ... (**व्यवधान**)

†[شری رفیق عالم (بہار) : میں بھی اسکی تائید کرتا ہوں - ..(مداخلت)

†[ ]Transliteration in Arabic Script.

उपसभापति : मंत्री जी कुछ बोलना चाह रहे हैं । . . . (व्यवधान) . . .

The Minister is on his feet. Let him speak.

SHRI AJIT KUMAR PANJA: If I am allowed to speak, whatever the hon. Member said and with which most of the Members associated, I fully agree with them. The time and other demands regarding Urdu programme are being studied. I have taken this up soon after assuming charge. We are trying to locate the areas and the manner in which it could be given. After studying, we will be able to come to the House and say what we have done.

श्री मोहम्मद अजजल उर्फ मीम अफजल : मैडम, इस पर . . . (व्यवधान) . . .

†[شری محمد افضل عرف م -

افضل : میڈم اس پر . . (مداخلت)]

उपसभापति : उन्होंने एशोरेंस दे दी है । अब इससे ज्यादा कुछ नहीं । . . (व्यवधान) उन्होंने एशोरेंस दे दी है, अब उसके बाद कुछ नहीं ।

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : मैडम, उन्होंने कहा कि हम इस पर गौर कर रहे हैं । जब कभी डिमांड उठाई जाती है, तो यह कह दिया जाता है कि इस पर गौर की जा रही है ।

†[شری محمد افضل عرف م -

افضل : میڈم انہوں نے کہا کہ ہم اس پر غور کر رہے ہیں- جب کبھی ڈمانڈ اٹھائی جاتی ہے - تو یہ کہدیا جاتا ہے کہ اس پر غور کی جا رہی ہے -]

उपसभापति : वह गौर कर रहे हैं, बस हो गया ।

†[ ]Transliteration in Arabic Script.

The Minister is here and he gave an assurance. He is studying. Beyond that, I cannot allow any assurance...(*Interruptions*). Please sit down...(*Interruptions*). He cannot give...(*Interruptions*).

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल : इनको बता देना चाहिए कि यह इसको एक साल के बाद या पंद्रह दिन के बाद इंप्लिमेंट करेंगे ।

†[شری محمد افضل عرف م -

افضل : انکو بتا دینا چاهئے - که یه اسکو ایک سال کے بعد یا پندرہ دن کے بعد امپلیمنٹ کرینگے -]

उपसभापति : कोई इसको नहीं बताएंगे । आप बैठ जाइये ।

Acute Shortage of Power in Karnataka

SHRI K. G. MAHESHWARAPPA (Karnataka): Karnataka is facing an acute shortage of power affecting the industrial and agricultural development of the State. Hydro-power is the main source of energy in the State. The Rajchur Thermal Station was expected to augment power generation to a considerable extent in the event of the three units generating power. Unfortunately, there are avoidable hurdles in respect of both the thermal and the hydel power generations.

The Central Government has not taken necessary steps in this regard. Only one unit has been functioning now. The second unit has been stopped for want of coal and for repairs. The setting up of the third unit, which should have been completed by this time, has been delayed and there is no hope for its completion in the near future. If all the three units start generating power, the total production would be 650 MW. When the projet was planned, it was decided that the Singareni Mines of Andhra Pradesh would supply coal to

†[ ]Transliteration in Arabic Script.